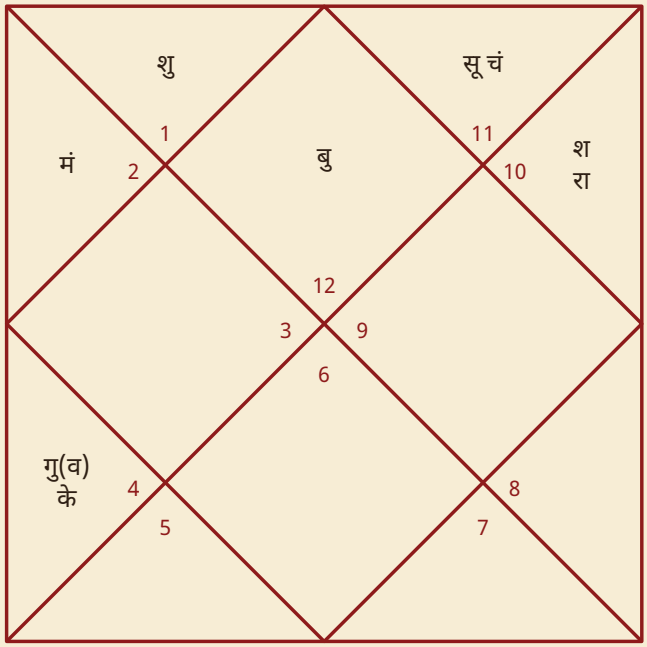
॥ शुभमस्तु ॥

साथ पत्री

Kabir · Ananya

दोनों कुंडलियाँ

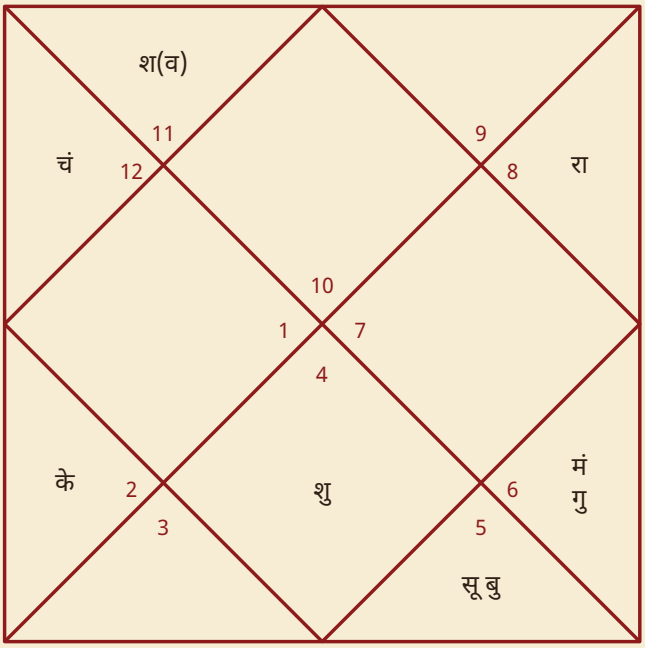
दोनों जन्म कुंडलियाँ, पुराने ढंग से बनी हुईं, और हर कुंडली किन बातों से बनी।



जन्म कुंडली · Kabir

जन्म की जानकारी

नाम	Kabir
जन्म की तारीख़	14 मार्च 1991
जन्म समय	07:20
लग्न	मीन
राशि	कुंभ
नक्षत्र	धनिष्ठा, पद 3
चल रही दशा	गुरु–राहु, सितंबर 2027 तक



जन्म कुंडली · Ananya

जन्म की जानकारी

नाम	Ananya
जन्म की तारीख़	2 सितंबर 1993
जन्म समय	17:40
लग्न	मकर
राशि	मीन
नक्षत्र	पूर्व भाद्रपद, पद 4
चल रही दशा	बुध–गुरु, दिसंबर 2028 तक

पंडितजी की बात

यह साथ की पत्री कबीर और अनन्या की है। आप दोनों नवंबर 2019 से पति-पत्नी हैं। इसमें आप दोनों की कुंडलियाँ साथ रखकर पढ़ी गई हैं।

सीधी बात यह है कि गुण थोड़े कम मिलते हैं और बाहर का बोझ ज़्यादा है, पर रिश्ता नाज़ुक नहीं है।

अभी आप दोनों एक साथ शनि के धीमे, भारी दौर में हैं, जो फ़रवरी 2028 तक चलता है। यह दौर मेहनत माँगता है, और इसे आप में से कोई अकेला नहीं उठाता।

आगे लिखा है कि आप कहाँ सहज मिलते हैं, कहाँ ध्यान देना है, और आने वाले बरस क्या माँगते हैं। आपका घर सब्र, हँसी और भरोसे से भरा रहे, यही मेरी शुभकामना है।

मिलान: गुण और मंगल दोष

आप दोनों के चंद्रमा मिलाकर 36 में से 17 गुण बनते हैं। परंपरा कम से कम 18 गुण माँगती है, इसलिए यह अंक थोड़ा नीचे है। यह ध्यान रखने की बात है, फ़ैसला नहीं।

पहले वह, जो आपके बीच सहज आता है। योनि पूरी मिलती है, यानी रोज़ की नज़दीकी में आपके स्वभाव आसानी और गर्मजोशी से मिलते हैं। नाड़ी सबसे भारी कूट है, और वह भी पूरी मिलती है। यानी आप दोनों की प्रकृति अलग है, और परंपरा इसे अच्छा तालमेल गिनती है।

अब वह, जिसे सँभालना है। वश्य आधे से कम है, यानी आप दोनों एक ही बातों में आगे चलना चाह सकते हैं। जल्दी तय कर लीजिए कि कौन-सी बात कौन तय करेगा, और बारी-बारी चलिए। गण भी आधे से कम है, यानी रफ़्तार और लहजा अलग है: कोई जल्दी बोलता है, कोई देर से। इनमें कोई ग़लत नहीं है, बस गरम बहस रोकने का एक नरम तरीक़ा पहले से तय रखिए।

भकूट भी आधे से कम है, और यहाँ राहत के आम आधार लागू नहीं होते। वजह यह है कि दोनों चंद्र राशियों के स्वामी, शनि और गुरु, आपस में दोस्त नहीं हैं। परंपरा इसे घर-गृहस्थी की बात मानती है, इसलिए घर चलाने की ज़िम्मेदारी साथ मिलकर बाँटिए। घर की योजना साथ बनाइए, और पैसों की बात नियम से कीजिए।

कबीर और अनन्या, दोनों को मंगल दोष है, यानी क़रीबी रिश्ते में ज़्यादा जोश और सीधापन रहता है। दोनों में होने से कई परंपराएँ इसे बराबरी का तालमेल मानती हैं, और फ़िक्र हल्की हो जाती है। अनन्या का मंगल गुरु के साथ बैठा है, इसलिए उनका दोष और हल्का गिना जाता है। फिर भी दो मज़बूत मिज़ाजों को रुकने और फ़ैसले बाँटने का साफ़ तरीक़ा चाहिए, और यह आदत आप बना सकते हैं।

आख़िर में एक बात याद रखिए: आप दोनों की जन्म कुंडलियाँ किसी भी एक अंक से ज़्यादा मायने रखती हैं।

आप दोनों का स्वभाव

कबीर का लग्न मीन है, इसलिए उनका स्वभाव नरम, नम्र और बड़े दिल वाला है। वे किसी की भलाई याद रखते हैं। उनका चंद्रमा कुंभ में है और नक्षत्र धनिष्ठा है। वे आज़ाद मिज़ाज के हैं, दोस्तों के वफ़ादार हैं और इत्र-फूलों के शौक़ीन हैं। हिम्मत, संगीत और ताल का शौक़, और खुला हाथ, ये उन्हें धनिष्ठा से मिलते हैं। वे बिना थके देर तक काम कर लेते हैं, पर ज़िंदगी में चढ़ाव-उतार भी बारी-बारी आते हैं।

कबीर का सबसे बलवान ग्रह गुरु है। वे सीखकर बढ़ते हैं, और जो सीखते हैं उसे सिखाते भी हैं। इसका दूसरा पहलू है उपदेश देना, या जितना निभ सके उससे ज़्यादा वादा करना। उनकी कुंडली में चंद्रमा सबसे कम बलवान है, और उनके मन को सच्चा आराम चाहिए।

अनन्या का लग्न मकर है। वे डटी रहने वाली और मेहनती हैं, और जो काम उठाती हैं, उसे पूरा करती हैं। शुरुआत थोड़ी धीमी रहती है, और बाहर से उनका रवैया सँभला हुआ दिखता है। उनका चंद्रमा मीन में है और नक्षत्र पूर्व भाद्रपद है। वे भावुक हैं, कल्पना वाली हैं, बोली में नरम हैं, और मुश्किल लोगों को भी जीत लेती हैं। ग्रंथ यह भी जोड़ते हैं कि कभी-कभी उनका मिज़ाज तेज़ हो जाता है। साफ़ बोली, कमाने का हुनर और ऊँचे आदर्श उन्हें अपने नक्षत्र से मिलते हैं।

अनन्या का सबसे बलवान ग्रह सूर्य है। स्वाभिमान उनके लिए मायने रखता है, और असली ज़िम्मेदारी मिलने पर वे सबसे अच्छा करती हैं। इसका दूसरा पहलू यह है कि छोटी बातें उन्हें तुरंत चुभ जाती हैं। उनकी कुंडली में बुध सबसे कम बलवान है। उनका दिमाग़ तेज़ है और बात में वज़न है, पर तय हो चुके फ़ैसले पर बार-बार सोचने की आदत है।

अब दोनों को साथ रखें, तो कुछ बातें दोनों कुंडलियों में एक जैसी मिलती हैं।

पहली बात यह है कि दोनों आसपास के मिज़ाज को अपने ऊपर ले लेते हैं। कबीर दूसरों का मिज़ाज अपने ऊपर ले लेते हैं, इसलिए साफ़ हदें बाँधना उनके सीखने की बात है। अनन्या भी अक्सर वही महसूस करती हैं जो दूसरे करते हैं, और साफ़ हदें उन्हें थकने से बचाती हैं।

दूसरी बात यह है कि दोनों की कुंडली में गुरु की आवाज़ है। कबीर के पास लोग अपने सवाल लेकर आते हैं। अनन्या के पास दोस्त खरी और इंसाफ़ की बात सुनने आते हैं।

तीसरी बात यह है कि दोनों फ़र्ज़ को गंभीरता से लेते हैं। कबीर पर लोग भरोसा करते हैं, क्योंकि ज़रूरत पड़ने पर वे पहुँच जाते हैं। अनन्या के लग्न का स्वामी शनि उन्हें सहने की ताक़त और फ़र्ज़ का एहसास देता है। सच बोलना और बड़ों का आदर करना कबीर को सहज आता है। अनन्या को भी यही सहज आता है।

जहाँ दोनों कुंडलियाँ मिलती हैं

एक पुराना तरीक़ा है कि एक की कुंडली को दूसरे की कुंडली पर रखकर देखा जाए। आपकी कुंडलियाँ दो जगह बहुत क़रीब से मिलती हैं।

पहले मीठी बात। अनन्या की कुंडली में साथी की तस्वीर दिखाने वाला ग्रह चंद्रमा है, और वह कबीर के लग्न की राशि में बैठा है। मतलब, अनन्या के मन में साथी की जो तस्वीर है, उसे कबीर में घर मिलता है। आप दोनों के बीच पहचान का एहसास है।

दूसरा मेल ज़्यादा गंभीर है। अनन्या का शनि कबीर के चंद्रमा के बहुत पास है। जानकार इसे फ़र्ज़, ठहराव और वज़न मानते हैं: ऐसा रिश्ता जो ख़ुद को गंभीरता से लेता है और मेहनत से टिकता है। कभी-कभी कबीर को लग सकता है कि उन्हें रोका या परखा जा रहा है। इसे आप दोनों मिलकर हल्का रख सकते हैं: बात साफ़ कीजिए, और साथ के आराम के लिए समय रखिए।

अब बाहर के बोझ की बात। आपके बीच का मेल अपनी जगह है, पर रिश्ते पर दबाव ज़्यादातर बाहर से आता है। वजह यह है कि कबीर की कुंडली में शादी वाली जगह को कम सहारा मिला है। इसका मतलब यह नहीं कि रिश्ता नाज़ुक है। साझा दिनचर्या इस बोझ को बाँटने में मदद करती है, और यह बोझ आप दोनों मिलकर उठाते हैं।

शादी का दिन

आपकी शादी 26 नवंबर 2019 को जयपुर, राजस्थान में हुई। फेरे किस समय शुरू हुए, यह पता नहीं है। फेरों के समय के बिना शादी की कुंडली नहीं बनती, क्योंकि लग्न लगभग हर दो घंटे में बदलता है। इसलिए यहाँ वह दिन पढ़ा गया है, सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक।

उस दिन मंगलवार था। पुराने ग्रंथ शादी के लिए रविवार, मंगलवार और शनिवार नहीं चुनते। इसे ध्यान रखने की बात मानिए, फ़ैसला नहीं।

सूर्योदय से लगभग 09:22 बजे तक नक्षत्र विशाखा था, और उसके बाद अनुराधा। विशाखा उन ग्यारह नक्षत्रों में नहीं है जिन्हें ग्रंथ शादी के लिए माँगते हैं। अनुराधा उन ग्यारह में से एक है, इसलिए यह साथ देने वाली बात है।

तिथि अमावस्या थी, और लगभग 20:35 बजे से शुक्ल प्रतिपदा। ग्रंथ अमावस्या को शादी से बाहर रखते हैं, और यह भी वैसी ही ध्यान की बात है। शुक्ल प्रतिपदा को ग्रंथ शादी के लिए मान लेते हैं, इसलिए यह एक और जाँच है जो पूरी हुई।

अब आप दोनों के लिए वह दिन। तारा का मतलब है दिन के नक्षत्र को जन्म नक्षत्र से गिनना। अच्छी तारा उस इंसान के लिए दिन को ऊपर उठाती है। विशाखा के समय कबीर की तारा विपत थी, और अनुराधा के समय क्षेम, और दोनों शुभ ताराओं में गिनी गई हैं। पूरे दिन चंद्रमा कबीर के जन्म के चंद्रमा से मज़बूत जगह में रहा, जिसे चंद्र बल कहते हैं। पुराने आचार्य चंद्र बल को तारा से ऊपर रखते हैं।

विशाखा के समय अनन्या की तारा जन्म थी, जो बीच की मानी जाती है। अनुराधा के समय उनकी तारा संपत थी, जो शुभ है। उनका चंद्र बल पहले बीच का रहा, और अनुराधा के साथ मज़बूत हो गया।

रवि शुद्धि यानी शादी में सूर्य के बल की पुरानी जाँच, और यह कबीर के लिए पूरी हुई। गुरु अनन्या के चंद्रमा से बीच वाली जगह में था। ऐसे गुरु के लिए परंपरा गुरुवार की कोई छोटी आदत या पूजा बताती है, अगर मन माने; ज़रूरी बिलकुल नहीं।

शादी के दिन कबीर की गुरु–शुक्र अंतर्दशा चल रही थी, जो इम्तिहान वाली थी। अनन्या की बुध–शुक्र अंतर्दशा चल रही थी, जो मज़बूत थी। यानी उस दिन आप दोनों शुक्र की अंतर्दशा में थे।

शादी का दिन जन्म कुंडलियों के साथ पढ़ा जाता है, उनके ऊपर नहीं, और जहाँ फ़र्क़ हो वहाँ जन्म कुंडलियाँ ज़्यादा मायने रखती हैं।

साथ के बरस

अभी कबीर की गुरु की महादशा चल रही है, और उसमें राहु की अंतर्दशा, जो सितंबर 2027 तक है। यह मिला-जुला दौर है, जिसमें फ़ायदे और ख़र्च के बीच का रास्ता निकालना होता है। इसमें नए विचारों और बाहरी असर को अपने उसूलों पर परखिए। अनन्या की बुध की महादशा में गुरु की अंतर्दशा चल रही है, जो दिसंबर 2028 तक है। यह परखने वाला दौर है, और इसमें बारीकियों को पूरी बात से जोड़ना है।

दोनों के दौर पैसे पर एक ही बात कहते हैं: कुछ पैसा हाथ में रखिए। उधार और बड़ी ख़रीद का फ़ैसला धीरे लीजिए, झोंक में नहीं।

आगे का मोड़ भी जान लीजिए। सितंबर 2027 से कबीर की शनि की महादशा शुरू होती है, और इसमें जो मिलता है, मेहनत से मिलता है। यह दौर कहता है कि जो बोझ आपका है उसे पूरा उठाइए, और जो नहीं है उसे नीचे रख दीजिए। इसकी पहली अंतर्दशा शनि–शनि अक्टूबर 2030 तक है, और उसमें भी पैसे की वही सावधानी है। ग्रंथ कहते हैं कि इसकी शुरुआत मुश्किल हो सकती है, पर आख़िरी हिस्सा अच्छा फल देता है।

दिसंबर 2028 से अगस्त 2031 तक अनन्या की बुध–शनि अंतर्दशा है, जो मज़बूत है। इसमें अनुशासन और सब्र उनकी बातचीत और पढ़ाई का साथ देते हैं। अगस्त 2031 से उनकी केतु की महादशा आती है, जो साथ देने वाली है। यह भीतर की तरफ़ जाने और पुराने हुनर पर भरोसा करने का समय है।

जुलाई 2036 से सितंबर 2037

इन बरसों में अनन्या की अंतर्दशा मज़बूत है, और कबीर की इम्तिहान वाली। अनन्या की केतु–शनि अंतर्दशा पैसे और अपने कामों के लिए अच्छी है, और जो काम टाला था उसे शुरू करने का मौका देती है। कबीर की शनि–शुक्र अंतर्दशा परखने वाली है, और इसमें भी पैसे की वही सावधानी लौटती है। इस दौर में घर और माहौल का ज़्यादा बोझ अनन्या उठाती हैं, और कबीर को राहत तब मिलती है जब उनसे कम माँगा जाए। यह बात आपस में खुलकर कह दीजिए, और दौर बीतने पर ज़िम्मेदारियाँ आपस में बदल लीजिए।

दोनों पर शनि। नवंबर 2026 से फ़रवरी 2028 तक आप दोनों के चंद्रमा पर एक साथ शनि का दौर है। कबीर के लिए यह साढ़ेसाती का आख़िरी चरण है और अनन्या के लिए बीच का चरण। इसमें मेहनत और ख़र्च ज़्यादा लग सकते हैं, और साझा दिनचर्या, सब्र और सीधी योजनाएँ इसका सहारा हैं। अगस्त 2029 से अप्रैल 2030 तक यही मेल फिर बनता है। उस बार भी दौर धीमा और भारी रहता है, और सहारा वही है जो पहले बताया।

साझा ग्रह। नवंबर 2026 से सितंबर 2027 तक आप दोनों गुरु की दशाओं से गुज़रते हैं। दिसंबर 2028 से अक्टूबर 2030 तक आप दोनों शनि की दशाओं से गुज़रते हैं। अक्टूबर 2030 से अगस्त 2031 तक आप दोनों बुध की दशाओं से गुज़रते हैं।

साथ के बरस

से	तक	Kabir	Ananya	साथ में
नवंबर 2026	सितंबर 2027	गुरु–राहु (मिला-जुला)	बुध–गुरु (इम्तिहान वाला)	मिला-जुला
सितंबर 2027	दिसंबर 2028	शनि–शनि (मिला-जुला)	बुध–गुरु (इम्तिहान वाला)	मिला-जुला
दिसंबर 2028	अक्टूबर 2030	शनि–शनि (मिला-जुला)	बुध–शनि (मज़बूत)	मिला-जुला
अक्टूबर 2030	अगस्त 2031	शनि–बुध (मिला-जुला)	बुध–शनि (मज़बूत)	मिला-जुला
अगस्त 2031	जनवरी 2032	शनि–बुध (मिला-जुला)	केतु–केतु (मिला-जुला)	मिला-जुला
जनवरी 2032	मार्च 2033	शनि–बुध (मिला-जुला)	केतु–शुक्र (मज़बूत)	मिला-जुला
मार्च 2033	जून 2033	शनि–बुध (मिला-जुला)	केतु–सूर्य (मज़बूत)	मिला-जुला
जून 2033	अगस्त 2033	शनि–केतु (मिला-जुला)	केतु–सूर्य (मज़बूत)	मिला-जुला
अगस्त 2033	मार्च 2034	शनि–केतु (मिला-जुला)	केतु–चंद्रमा (मिला-जुला)	मिला-जुला
मार्च 2034	जुलाई 2034	शनि–केतु (मिला-जुला)	केतु–मंगल (मिला-जुला)	मिला-जुला
जुलाई 2034	जुलाई 2034	शनि–शुक्र (इम्तिहान वाला)	केतु–मंगल (मिला-जुला)	मिला-जुला
जुलाई 2034	अगस्त 2035	शनि–शुक्र (इम्तिहान वाला)	केतु–राहु (मिला-जुला)	मिला-जुला
अगस्त 2035	जुलाई 2036	शनि–शुक्र (इम्तिहान वाला)	केतु–गुरु (मिला-जुला)	मिला-जुला
जुलाई 2036	सितंबर 2037	शनि–शुक्र (इम्तिहान वाला)	केतु–शनि (मज़बूत)	Ananya सँभालें
सितंबर 2037	सितंबर 2037	शनि–शुक्र (इम्तिहान वाला)	केतु–बुध (मिला-जुला)	मिला-जुला
सितंबर 2037	अगस्त 2038	शनि–सूर्य (इम्तिहान वाला)	केतु–बुध (मिला-जुला)	मिला-जुला
अगस्त 2038	सितंबर 2038	शनि–सूर्य (इम्तिहान वाला)	शुक्र–शुक्र (मज़बूत)	Ananya सँभालें
सितंबर 2038	नवंबर 2038	शनि–चंद्रमा (इम्तिहान वाला)	शुक्र–शुक्र (मज़बूत)	Ananya सँभालें

पैसा, घर और औलाद

कबीर की कुंडली में पैसे का दर्जा साधारण है, यानी बचत अपने आप नहीं आती, सोच-समझकर बनानी पड़ती है। अनन्या की कुंडली में भी दर्जा साधारण है, और वहाँ भी बचत सोच-समझकर बनती है। साथ ही दोनों कुंडलियाँ पैसे को मज़बूत पहलू मानती हैं, जो नियमित आदतों का फल देता है।

कबीर की कुंडली सट्टे को छोटा रखने को कहती है, और कोई भी दाँव शुरू करने से पहले उसकी सीमा तय करने को। उनके यहाँ पैसा अचानक किसी भी तरफ़ बदल सकता है, इसलिए अचानक के ख़र्च के लिए एक सुरक्षित रक़म रखिए। साझे या उधार के पैसे का हर काग़ज़ दस्तख़त से पहले पढ़ लीजिए। ख़र्च अक्सर बचत से आगे निकल जाता है, इसलिए ख़र्च करने से पहले बचत अलग रख दीजिए।

अनन्या को फ़ायदा अनोखे रास्तों से, झटकों में आ सकता है, इसलिए जब आए तो पहले उसका एक हिस्सा अलग रख दीजिए। उनके यहाँ पैसा कभी-कभी बेतरतीब आता-जाता है, इसलिए सीधा हिसाब रखना ठीक रहता है। शनि के इस दौर में कबीर की कुंडली तंग बजट की बात कहती है। अनन्या की अभी की अंतर्दशा ख़र्च से पहले सीमा तय करने को कहती है। साथ में आप दोनों का तरीक़ा सीधा रहे: हर महीने एक तय बचत, और लिखा हुआ हिसाब।

घर की बात करें तो कबीर की कुंडली टिकी हुई बचत से बना अपना एक घर गिनती है। अनन्या की कुंडली ज़िंदगी भर में दो से तीन घर, प्लॉट या जायदाद गिनती है। ये गिनतियाँ कुंडली का झुकाव हैं, वादा नहीं। कबीर को घर में ठहराव महसूस करने में समय लगता है, इसलिए ख़ुद के साथ नरमी रखिए। अनन्या घर में अपनापन और ऊर्जा लाती हैं, और उसे थोड़ा क़ायदा देना अच्छा रहता है।

औलाद के बारे में कबीर की कुंडली की गिनती एक या दो की तरफ़ झुकती है। अनन्या की कुंडली की अपनी गिनती भी एक या दो की तरफ़ झुकती है। दोनों कुंडलियाँ कहती हैं कि शुरुआत उम्मीद से कुछ देर से हो सकती है, और इसका मतलब इनकार नहीं, धीरज है। अगर आप चाहें, तो परंपरा अप्रैल 2037 से सितंबर 2037 को औलाद के लिए खुला मौसम मानती है। यह एक समय है, कोई वादा नहीं, और फ़ैसला आपका है।

आप दोनों के उपाय

पहले वे बातें जो आप दोनों साथ कर सकते हैं। भकूट के लिए परंपरा साथ की कोई आदत बताती है, जैसे साथ की प्रार्थना या साथ मिलकर कुछ देना। यह सहारा है, वादा नहीं; चाहें तो कीजिए, ज़रूरी बिलकुल नहीं। जिन ग्रहों के दौर आप साथ जीते हैं, उनका वार और उनकी आदतें साथ निभाना ठीक रहता है, हल्के ढंग से, फ़र्ज़ की तरह नहीं।

गुरु: अभी आप दोनों का साझा ग्रह।

उपाय

- हर हफ़्ते एक तय समय रखिए, जब आप किसी से सीखें या किसी को सिखाएँ। अपने वादे निभाइए, और जो जानते हैं उसे बिना दिखावे के बाँटिए।
- गुरुवार गुरु का दिन है; अगर मन माने, तो बृहस्पति देव या विष्णु जी के आगे दीया जलाइए। मंत्र “ॐ बृहस्पतये नमः” 108 बार बोला जाता है, या समय कम हो तो 11 बार।
- देना चाहें तो गुरुवार को किसी शिक्षक या विद्यार्थी को चना दाल, हल्दी या पीली मिठाई दीजिए, उतना जितना आसानी से दे सकें।
- लाल किताब कहती है: मन करे तो हरि से प्रार्थना कीजिए, और किसी ज़रूरतमंद को थोड़ी चने की दाल दीजिए।
- कबीर के लिए रत्न: पुखराज, पहनना चाहें तो; ज़रूरी नहीं। अनन्या के लिए रत्न की ज़रूरत नहीं।

शनि: आप दोनों के आगे के दौरों का ग्रह, और दिसंबर 2028 से साझा।

उपाय

- समय पर पहुँचिए, और धीमा, सीधा-सादा काम पहले निपटाइए। जो आपके यहाँ काम करता है, उसे समय पर और इज़्ज़त से मेहनताना दीजिए।
- शनिवार शनि का दिन है; अगर मन माने, तो शनि देव के आगे दीया जलाइए, या शनि या हनुमान मंदिर जाइए। मंत्र "ॐ शनैश्चराय नमः" 108 बार या 11 बार बोला जाता है।
- देना चाहें तो शनिवार को किसी मज़दूर या हाथ से मेहनत करने वाले को काले तिल, सरसों का तेल या कंबल दीजिए। उतना ही दीजिए, जितना आसानी से दे सकें।
- लाल किताब कहती है: ज़रूरतमंद को थोड़ी साबुत उड़द दीजिए, और अपनी रोटी का एक टुकड़ा कौओं के लिए रख दीजिए।
- अनन्या के लिए रत्न: नीलम, पहनना चाहें तो; ज़रूरी नहीं। कबीर के लिए रत्न की ज़रूरत नहीं।

बुध: अनन्या की चल रही महादशा का ग्रह, और अक्टूबर 2030 से साझा।

उपाय

- रोज़ दस मिनट कुछ पढ़िए, और अपनी योजनाएँ दिमाग़ में रखने के बजाय लिख लीजिए। थोड़ा धीमे बोलिए, और अपनी बात एक बार सीधे कहिए।
- बुधवार बुध का दिन है; अगर मन माने, तो विष्णु जी या गणेश जी के आगे दीया जलाइए। मंत्र "ॐ बुधाय नमः" 108 बार या 11 बार बोला जाता है।
- देना चाहें तो बुधवार को किसी पढ़ने वाले बच्चे को साबुत हरी मूंग या हरी सब्ज़ियाँ दीजिए, जितना आसानी से दे सकें।
- अनन्या के लिए लाल किताब कहती है: मन करे तो दुर्गा पाठ पढ़िए या सुनिए, और ज़रूरतमंद को थोड़ी साबुत मूँग दीजिए।
- अनन्या के लिए रत्न: पन्ना, पहनना चाहें तो; ज़रूरी नहीं। कबीर के लिए रत्न की ज़रूरत नहीं।

कबीर

कबीर की महादशा गुरु की है और आगे शनि की आती है, और दोनों की बातें ऊपर साथ की सूची में हैं। उनकी चल रही अंतर्दशा राहु की है।

उपाय

- जहाँ आप स्क्रॉल करते हैं या झोंक में ख़र्च करते हैं, वहाँ हद तय कीजिए। रोज़ एक घंटा बिना स्क्रीन के रहिए, और बड़े फ़ैसले से पहले एक दिन रुकिए।
- अगर मन माने, तो शनिवार को दुर्गा जी के आगे दीया जलाइए; मंत्र "ॐ राहवे नमः" 108 बार या 11 बार बोला जाता है।
- देना चाहें तो शनिवार को किसी ज़रूरतमंद को उड़द, काले तिल या कंबल दीजिए, जितना आसानी से दे सकें।
- लाल किताब कहती है: ज़रूरतमंद को कुछ मूली या थोड़ी सरसों दीजिए, या गली के कुत्ते को सादी रोटी दीजिए।

- रत्न की ज़रूरत नहीं।

अनन्या

अनन्या की महादशा बुध की है, अंतर्दशा गुरु की है, और आगे शनि की अंतर्दशा आती है। तीनों की पूरी बातें ऊपर साथ की सूचियों में दी गई हैं, इसलिए यहाँ दोहराई नहीं गई हैं।

आपके सवाल

आपने पूछा है कि घर कब ख़रीदें और कौन-सा समय अच्छा रहेगा। दोनों कुंडलियाँ घर और जायदाद के लिए ये समय बताती हैं।

कबीर की कुंडली में:

- अक्टूबर 2030 से जून 2033 तक शनि–बुध दशा, जो घर और जायदाद के लिए हल्का साथ देने वाला दौर है।
- सितंबर 2046 से फ़रवरी 2049 तक बुध–बुध दशा, जो घर के लिए ख़ास वज़न रखती है।
- फ़रवरी 2050 से दिसंबर 2052 तक बुध–शुक्र दशा, जो घर और जायदाद का एक और समय है।

अनन्या की कुंडली में:

- मार्च 2034 से जुलाई 2034 तक केतु–मंगल दशा, जिसमें घर और जायदाद की बात उठती है।
- अगस्त 2044 से अक्टूबर 2045 तक शुक्र–मंगल दशा, जो फिर घर और जायदाद का समय है।

पास के समय में, जून 2027 से अक्टूबर 2027 तक अनन्या के लिए घर और जायदाद का विषय सबसे ज़्यादा सामने रहता है। उसी जून से शनि उनके घर के मामलों में ज़्यादा सब्र माँगता है।

पैसे की तरफ़ से भी दो बातें हैं। कबीर की कुंडली मार्च 2025 से फ़रवरी 2028 तक नया क़र्ज़ लेने से बचने को कहती है। अनन्या की कुंडली जून 2027 से अप्रैल 2030 तक यही बात कहती है। जायदाद की गिनती की तरह ये समय भी झुकाव हैं, वादा नहीं।

याद रखने की तीन बातें

1. हफ़्ते में एक बार दस मिनट बैठकर तय कीजिए कि इस हफ़्ते कौन-सा फ़ैसला किसके हाथ में रहेगा।
2. हफ़्ते में एक शाम सिर्फ़ साथ के आराम के लिए रखिए, जिसमें काम और हिसाब की कोई बात न हो।
3. कबीर अपना नरम पहलू क़रीबी लोगों के सामने आने दें, और अनन्या ख़ुद को आराम और मौज की छूट दें।

आप दोनों का साथ हर मौसम में गर्म और भरोसेमंद बना रहे।

आख़िर में: दोनों की महादशाएँ

दोनों ज़िंदगियों की सारी महादशाएँ, जो हिसाब देखना चाहें उनके लिए।

Kabir: इस ज़िंदगी की महादशाएँ

महादशा	से	तक	उम्र
मंगल	मार्च 1991	सितंबर 1993	0–2
राहु	सितंबर 1993	सितंबर 2011	2–20
गुरु (चल रही)	सितंबर 2011	सितंबर 2027	20–36
शनि	सितंबर 2027	सितंबर 2046	36–55
बुध	सितंबर 2046	सितंबर 2063	55–72
केतु	सितंबर 2063	सितंबर 2070	72–79
शुक्र	सितंबर 2070	सितंबर 2090	79–99

Ananya: इस ज़िंदगी की महादशाएँ

महादशा	से	तक	उम्र
गुरु	सितंबर 1993	अगस्त 1995	0–1
शनि	अगस्त 1995	अगस्त 2014	1–20
बुध (चल रही)	अगस्त 2014	अगस्त 2031	20–37
केतु	अगस्त 2031	अगस्त 2038	37–44
शुक्र	अगस्त 2038	अगस्त 2058	44–64
सूर्य	अगस्त 2058	अगस्त 2064	64–70
चंद्रमा	अगस्त 2064	अगस्त 2074	70–80
मंगल	अगस्त 2074	अगस्त 2081	80–87

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥

सब सुखी हों, सब निरोग रहें, सब शुभ देखें, और किसी को दुख न मिले।

॥ इति शुभम् ॥